 ISSN: 2582-6530

आईनाम इरिंग की तीन कविताएँ

(1)
रंगरेज

जब संसार बनकर तैयार हुआ होगा
तब उसे रंगने की बारी आई होगी।
उसने रंगों से भरे डिब्बियों का
ढक्कन उतारा होगा
और उँगलियों से आसमान पर
सात रंगों की सात रेखाएँ खींच दी होंगी,
वह इंद्रधनुष बन गया होगा।

फिर इस रंग को उस रंग से मिलाकर
कुछ गहरा कुछ हल्का कर
मिट्टी, पत्थर, पेड़-फूल, पशु-पक्षी
और अंत में मनुष्य को रंगा होगा।
पर न जाने क्यों उसने-
पानी पर एक बूँद रंग न गिराया,
हवा पर एक बूँद रंग न निचोड़ा
उजास पर एक बूँद रंग न छिड़का
वक़्त पर एक बूँद रंग न डाला
एहसास पर एक बूँद रंग न मला।
उसने कई चीजों को बेरंग ही रहने दिया
या फिर यह उसका आठवाँ रंग है
जो एक अनसुलझी पहेली है
और उनका यह आठवाँ रंग काफ़ी है
मनुष्य को जीवन भर उलझाए रखने के लिए।
हाय! न जाने यह कौन रंगरेज हैं?

(2)
प्यारी आँखें

(एक)

किसी-किसी की आँखें
बहुत प्यारी होती है।
हँसते हैं
तो साथ हँसने लगते हैं
रोते हैं
तो बड़ी देर तक नमी रहती है।
ऐसी आँखों की झील में
कुछ भी तो डूबता नहीं।
प्रेम का फूल हो
या नाराज़गी का पत्थर
सब कुछ तैर जाता है।
डरती हूँ
इस गहरी-लंबी दुनिया में
वे प्यारी आँखें कहीं डूब न जाए
फिर लगता है
यह गहरी-लंबी दुनिया ही
उन्हीं आँखों में तैर रही है।

(दो)

मन कोई पिंजरा होता
और उदासी कोई चंचल पंछी
आँखों से
चेहरे से
दिल से

अपने सारे पंखों को समेटकर
मेरी छाती से वह उड़ जाता
सरहद पार
कहीं दूर
बहुत दूर।

(3)

पहाड़

पहाड़ को और पहाड़ होना चाहिए था
और ऊँचा
और दुर्गम
और ऊबड़-खाबड़
और जंगली।
हर एक पत्ता मुट्ठी
हर एक डाल तलवार
हर एक चट्टान फौलादी बन
और खूँखार होना चाहिए था
ताकि हवाओं की आजादी बनी रहे
चिड़ियों की आवाजें गूँजती रहें
झरने गिरते और बहते रहें
ताकि मनुष्य जाति के अंदर
पहाड़ी दुनिया को न उजाड़ने का खौफ़ बना रहे।

***

*(**लेखकीय परिचय:** डॉ. आईनाम इरिंग, शासकीय महाविद्यालय, गेकू, ज़िला अपर सियांग, अरुणाचल प्रदेश के हिंदी विभाग में सहायक प्रोफेसर हैं। आपकी हाल ही में प्रकाशित कविता-संग्रह 'मीत' बेहद चर्चित रहा है।*
मोबा: 7641915211, ई-मेल : ayinamering23@gmail.com)